Impact Factor 2.143 ISSN- 2319-8648
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

Current Global Reviewer

Multidiciplinary international research journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL
18th ,19th January 2019

जनसंचार माध्यम और हिंदी

संपादक
अरुण बी. गोदाम

सहसंपादक
डॉ. ऐनूर एस. शेख
हिंदी विभागाध्यक्षाकला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
राहाता

कार्यकारी संपादक
प्रा. दादासाहेब एन. डांगे
हिंदी विभाग,
हिंदी विभागाध्यक्षाकला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
राहाता

www.rjournals.co.in

Impact Factor – 2.143 ISSN – 2319-8648

Current Global Reviewer

Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

18th ,19th January 2019

जनसंचार माध्यम और हिंदी

संपादक
अरुण बी. गोदाम

सहसंपादक
डॉ. ऐनूर एस. शेख
हिंदी विभागाध्यक्षा कला, विज्ञान व वाणिज्य
महाविद्यालय, राहाता

कार्यकारी संपादक
प्रा. दादासाहेब एन. डांगे
हिंदी विभाग
हिंदी विभाग कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
राहाता

Shaury Publications

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

17	जनसंचार माध्यम और हिंदी का स्वरूप — **प्रा. अच्युत साधु शिंदे**	60
18	जनसंचार माध्यम और हिंदी — **डॉ. संजय म. महेर**	63
19	पत्रकारिता और हिंदी — **डॉ. मिलिंद कांबळे**	65
20	विविध संचार माध्यम और हिंदी— **डॉ. मंगल ससाणे**	68
21	संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका: भारतीय सिनेमा और हिंदी— **डॉ. प्रविण तुळशीराम तुपे**	71
22	इंटरनेट पर प्रकाशित काव्य में भावों की अभिव्यक्ति — **डॉ. सुजाता राजेंद्र लामखडे**	74
23	इंटरनेट और हिंदी— **डॉ.एन. डी.शेख**	77
24	पत्रकारिता और हिंदी— **डॉ. बेबी कोलते**	79
25	दूरदर्शन और हिंदी — **डॉ. दिपाश्री कैलास गडाख**	82
26	जनसंचार माध्यम और हिंदी — **डॉ. प्रतिभा आनंदराव जावळे**	84
27	इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम और हिंदी — **प्रा. रागिनी पुरूषोत्तम टेकाळे**	86
28	हिंदी विज्ञापन के प्रयोजन एवं विशेषताएँ — **डॉ.राजाराम दादा कानडे**	89
29	इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी सिनेमा — **डॉ. एस. बी. कोलते**	93
30	हिंदी सिनेमा और हिंदी — **श्रीमती जयश्री अर्जुन माथेसुळ**	96
31	संचार माध्यम और जन–जीवन के सरोकार — **प्रा.जी. पी. काथेपुरे**	100
32	हिंदी सिनेमा में हिंदी का अस्तित्व — **डॉ. श्वेता चौधारे**	104
33	हिंदी सिनेमा और हिंदी — **प्रा. संदिप दामू तपासे**	107
34	हिंदी सिनेमा और साहित्य — **प्रा. शरद कचेश्वर शिरोळे**	110

Current Global Reviewer Peer Reviewed Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (IIJIF) – 2.143, जनसंचार माध्यम और हिंदी | January 2019 | Peer Reviewed Journal

हिंदी सिनेमा में हिंदी का अस्तित्व

डॉ. श्वेता चौधारे
हिंदी विभागाध्यक्षा,कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई

भारतीय फिल्में जहां अपने सौ साल पुरे कर चुकी है, वहीं बॉलीवुड के नाम से जानी जानेवाली हिंदी सिनेमा इंडस्ट्री, जो अधिकतर मुंबई केंद्रित होने के कारण अपने पुराने नाम 'बंबई' से बॉलीवुड के नाम से जाना गया है, भारत की अधिकतर फिल्मों का निर्माण क्षेत्र है। १९३१ की पहली ध्वनि–चित्र मुद्रित फिल्म 'आलम आरा' से अब तक हिंदी फिल्में अपने विषय, प्रस्तुतीकरण की तकनीक, ध्वनि–चित्र संयोजन, भाषा, गीतों के कई पडावों को पार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना पर्चम लहरा रही है। हिंदी फिल्मों के इस बदलते रूप पर वैश्वीकरण का प्रभाव सहज दृष्टिगोचर होता है। जिसके चलते हिंदी सिनेमा आज केवल प्रेम, परिवार, आपसी संबंधों की उलझन भरे बंधन से मुक्त हो विज्ञान, फैन्टेसी तथा गहन सामाजिक विषयों में प्रवेश कर समांतर सिनेमा की ओर मूड रहा है।

१९९० के पश्चात आर्थिक उदारीकरण एवं विश्व बाजारवाद की संकल्पना ने हिंदी फिल्मों के ढांचे में अमूल परिवर्तन किए। बडी बजट्ट की फिल्मों ने नायक–नायिका को 'स्टारडम' से परिचित करवाया। बडी बजट की फिल्मों ने शेअर बाजार को प्रभावित किया, जिसके चलते व्यापार–उद्यम, विपणन, विज्ञापन जैसे क्षेत्रों पर भी हिंदी फिल्में असर दिखाने लगी। प्रवासी भारतीयों की बढती दर्शक संख्या के कारण आज विश्व के ९० से ज्यादा देशों में हिंदी सिनेमा अपना जलवा दिखा रही है। जिसके चलते २०th सेंचुरी फॉक्स, सोनी पिक्चर्स, वॉल्ट डिज्नी पिक्चर्स, वॉर्नर ब्रदर्स जैसी विदेशी कंपनियां भी भारतीय फिल्म बाजार में प्रवेश कर चुकी है। केंद्रीय फिल्म प्रसारण बोर्ड द्वारा २०१७ की कुल भारतीय फिल्मों में अर्थात १९८६ फिल्मों में हिंदी भाषा की फिल्मों की संख्या सर्वाधिक अर्थात ३६४ थी, जो कुल के १८ प्रतिशत से भी अधिक थी।

एक ओर राष्ट्भाषा–राजभाषा के रूप में जनप्रिय हो चुकी हिंदी वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड चुकी है, वहीं हिंदी फिल्में राज कपूर, रजनीकांत, अमिताभ बच्चन जैसे महानायकों के कारण एशिया, पूर्वी युरोप में प्रसिद्ध हो चुकी है। जिन हिंदी फिल्मों के बारे में यहां बात की जा रही है, उसमें हिंदी के साथ उर्दु का बेमालूम मिश्रण है। कहीं–कहीं हिंदी की अन्य बोलियां भी इन फिल्मों में सुनाई देती है। फिल्मों में जहां एक ओर हिंदी को अपनाकर देश की मान–शान के रक्षा का आह्वान किया जाता है, वहीं हिंदी सिनेमा में प्रयुक्त भाषा को लेकर समय–समय पर काफी बवाल उठता नजर आता है। जब अमेरिका के राष्ट्पती ओबामा अमेरिकी नागरिकों को जल्दी हिंदी सीखने के लिए उद्युक्त करते है, कि कही भारतीय हिंदी भाषा के सहारे आगे न बढ जाए। वहीं हिंदी प्रेमियों में यह डर उभर रहा है कि कही हिंदी फिल्मों में, जो कभी–कभी नाममात्र की हिंदी फिल्म कहलायी जाती है, उनसे धीरे–धीरे हिंदी भाषा ही नदारत न हो जाए। यहां फिल्मों से शुद्ध हिंदी के प्रयोग की भी उम्मीद नहीं की जा रही है, कि जिसमें अन्य किसी भाषा या बोली के शब्दों का स्थान ही न हो। संभवत: ऐसी फिल्में दर्शकों के निरस या हास्यास्पद होंगी। किंतु इन फिल्मों में अन्य बोलियों या भाषाओं का मिश्रण भी दर्शकों के लिए कभी–कभी पहेली–सा बन जाता है।

हिंदी फिल्मों में हिंदी के अलावा हो रहे अन्य भाषिक प्रयोग कितने सही और कितने असमंजस्य में डालने वाले है, इस आलेख के द्वारा स्पष्ट करने की कोशिश की जा रही है। १९९८ में मणिरत्नम द्वारा दिग्दर्शित फिल्म 'दिल से' में एक गीत 'दिया जले, जान जले' में की कुछ पंक्तियों के अर्थ ढूंढने के लिए हमें इंटरनेट या दक्षिण भाषा के जानकार की ही आवश्यकता पडती है। जिसके अनुसार प्रारंभिक हिंदी की पंक्तियों के बाद का स्वर ही बदल जाता है –

दिया जले, जान जले / नैनों तले भुवां जले

punchiri thanu kochiko
munthiri mutham chinthiko
manchani varna sundari vave
thankinaka thaqkadhimi aadum
thankanilave oye -2
thanka kolusale
koorlakum kuyilalae
aadana mayilalae -2

२००९ में प्रदर्षित 'अजब प्रेम की गजब कहानी' फिल्म का गीत 'तेरा होने लगा हूं' की प्रारंभिक पंक्तियां अंग्रेजी भाषा की है। इस भाषिक प्रयोग के होने का कारण ही पता नहीं चलता । जैसे

Shining in the shade in sunlike
a peral upon the ocean
come& feel me… girl geel me
thinking about the lovinmaking
& life sharing come & feel me… girl feel me

अभी कुछ दिनों पहले ही भारतीय सामाजिक समस्याओं पर आधारित फिल्म 'बत्ती गुल मीटर चालू' रिलीज हुई। जिसके 'गोल्ड तांबा' गीत की कुछ पंक्तियां यहां उद्धृत की गई है।

when you getting gold why go for tamba
लाटे को करदे टाटा करके बहाना
बेबी कलयुग है ऐनटी—हीरो का जमाना
when you gettingगब्बर why go for साम्भा अरे

भाषा की यह खिचडी पूरे गीत में चलती रहती है। जिसके निश्चित ही गीत मात्र मनोरंजन या हास्य का पात्र बन जाता है। यहां गीतों की रसात्मता तो पुरी तरह से ही गायब है।

द्रविडी भाषा, अंग्रेजी भाषा के अलावा तो हिंदी फिल्मों में अन्य देसी भाषा का मिश्रण बडी खूबी के साथ किया गया है। जहां अंग्रेजी के शब्द ऐसे प्रयोग किए जाते है, जैसे इनके बिना काम ही नहीं चलेगा। 'रॉय' फिल्म का निम्न गीत इसका उदाहरण है —

तू लेया दे मेनू *गोल्डनझुमके…*
मन जा वे मैनु *शॉपिग* करा दे
मन जा वे *रोमांटिक पिक्चर* दिखा दे
रिक्विस्टा पाइआं वे

२००० में प्रदर्शित कश्मीर के आतंकवाद की समस्या पर आधारित फिल्म 'मिशन कश्मीर', के गीत हिंदी के साथ कश्मीरी प्रांतीयता के रंगों में ढंले हुए है। वहां की परंपराओं को गीतों की कुछ पंक्तियों में बडी खूबी के साथ बांधने की कोशिश गीतकार ने की है। जैसे —

बुमरो बुमरो शाम रंग बुमरो
आए हो किस बगिया से तुम

यहां बुमरो का अर्थ भँरे से है। इसी फिल्म का दूसरा गीत —

रिद पोशमाल गिंदने द्राये लो लो
सरगम के मीठे—मीठे सुर घोलो

इसकी पहली पंक्ति का अर्थ है 'आओ मिलकर वसंत ऋतु का स्वागत करते है।'

किंतु १९९८ में आई फिल्म 'गुलाम' और २००३ में प्रदर्शित फिल्म 'मुन्नाभाई एमबीबीएस' ने भाषा संबंधी कई नियमों को ही उलझा कर रख दिया। इन फिल्मों के संवाद और गीतों में आमतौर पर अलग पहचान बन चुकी 'बंबईया भाषा' की झलक देखने के लिए मिलती है। इन फिल्मों के टपोरी भाषा में ढले गीतों के कुछ उदाहरण निम्न तरह से है —

ऐ , क्या बोलती तू ? / ऐ , क्या मैं बोलूं
सुन .... सुना .... आती क्या खंडाला ?

इन जैसे गीतों पर तत्कालीन समय में समाज को बिगाडने के भी आरोप लगे। पर इस से ज्यादा हिंदी का भ्रष्ट रूप मुन्नाभाई एमबीबीएस' ने दिखाया। जिसके नायक के मुख से 'बोले तो', 'ऐ मामू', 'आपुनकी', 'चिरकुट', 'मंगताए' जैसे शब्द हर किसी की जुबान पर चढ गए। इसका गीत 'एम बोले तो' की कुछ पंक्तियां निम्न तरह है।–

हे मेरी डिग्री ए १ ढासू बडी
ऐ क्या बोला
मेरी दुल्हन बनेगी सोनी कुडी
अरे वा क्या बोला रे....
हर तरफ लव्ह का माहौल होंगा
दिल का धडकन पर कंट्रोल होंगा

२०१३ में आयी फिल्म 'चैन्नई एक्सप्रेस' में अनोखा भाषिक प्रयोग देखा गया। जहां निर्माता के द्वारा हिंदी और तमिल भाषा की ऐसी मिलावट की गई, कि दांवे के साथ कहा जा सकता है कि इस फिल्म को न तो पूरी तरह से हिंदी भाशिक समझ पाएं होंगे न तमिल भाशिक।

प्रांतीय भाषाओं ने भी हिंदी फिल्मों पर काफी प्रभाव डाला। जिसके चलते देसी भाषा के कई वाक्यप्रचार या शब्द हिंदी फिल्मों में आ गए। जिसने प्रांतीयता के हल्के–हल्के रस के छींटों की मानों बौछार–सी कर दी। २०१२ की हिंदी फिल्म इंग्लिश–विंग्लिश के एक गाने के प्रसंग में मराठी पारंपारिक गीत का मुखडा गाने में नया रंग–सा भर देता है।

नवराई माझी लाडाची लाडाची गं
आवड हीला चंद्राची चंद्राची गं

आज की फिल्मों के मिश्रित अवतार भरे गीतों को देखते हुए अनायास मन इनकी तुलना अन्य कुछ गीतों से करता है। १९७२ की फिल्म पाकीजा का गीत – 'इन्हीं लोगों ने ले लिया दुपट्टा मेरा' हिंदी भाषा का सर्वसामान्य शब्दों से भरा किंतु भावगीत महसूस होता है।

१९६० में प्रदर्शित फिल्म 'मुगल ए आझम' फिल्म का गीत – 'मोहे पनघट पर नंद लाल छोड गयो रे' , २००२ की फिल्म 'देवदास' के गीत 'काहे छोडे मोहे नंदलाल' समान प्रतीत होता है। जिसमें भावों के अनुकूल हिंदी की क्षेत्रीय बोलीयों को स्थान दिया गया है। इसी तरह २०१२ की फिल्म 'पानसिंग तोमर' बुंदेलखंडी बोली पर, काय पो छे' यह २०१३ की गुजराती भाषा मिश्रित फिल्म, २०१५ की 'तनू वेड्स मनू' और २०१६ की 'दंगल' हरियाणी बोली पर, इसी साल प्रदर्शित फिल्म 'उडता पंजाब' में हिंदी–पंजाबी का मिश्रण देखा जा सकता है।

हिंदी फिल्मों में प्रांतीय और विदेशी भाषाओं का मिश्रण नयी बात नहीं है। किंतु यह मिश्रण अगर इन फिल्मों की नींव रही हिंदी भाषा पर ही हावी होने लगा, तो यह सोचने वाली स्थिति होंगी की फिल्मों में हिंदी भाषा का स्थान हो रहा है। हिंदी न केवल हमारी भाषिक अस्मिता का प्रतीक है, बल्कि वह हमारे देश के संवाद, गौरव, अतीत और भविष्य के लिए हमारे देश की प्रतिनिधी भाषा है। इस कारण हिंदी फिल्मों में भी हिंदी का स्थान सम्मानपूर्ण ही होना चाहिए।

संदर्भ–

1. समय, सिनेमा और इतिहास – हिंदी सिनेमा के सौ साल – संजीव श्रीवास्तव
2. हिंदी सिनेमा के १५० सितारे – विनोद विप्लवे
3. भारतीय सिनेमा का इतिहास –Maps Of India
4. भारतीय सिनेमा के १०० साल – आज तक, ९ मई २०१२